

निराला के कथा साहित्य में चेतना

Krishna Kanti Bhagat^{1*}, Dr. Mamta Rani²

¹ Research Scholar, Kalinga University

² Assistant Professor, Kalinga University

सार - प्राणी जगत में नर-नारी जहाँ इकाई रूप में जीवन यापन करते हैं, वहाँ वे अपने पारस्परिक संबंधों से सृष्टि का विकास भी करते हैं। प्रकृति नर-नारी के युग्म से सृष्टि के विकासक्रम को स्थिर रखती है और श्रम-विभाजन से समाज को गति देती निराला का कथा-साहित्य भी इस प्रश्न को लेकर आगे बढ़ रहा है। इतिहासकारों ने सभ्यता के आरम्भ में मातृ सत्तात्मक समाज होने की पुष्टि की है। इसके प्रमाण आज भी कुछ कबीलाई जातियों में दिख जाते हैं तो फिर हमारी इस कमतर स्थिति की शुरुआत कहाँ से और क्यों हुई ? इस उत्पादन के लिए मनुष्य को निरन्तर प्रकृति के साथ संघर्ष करना पड़ता है, जिससे वह उसके अनुकूल हो जाए। इस बीहड़ जंगल युग में जब प्रकृति पर इंसान का कोई नियन्त्रण नहीं था और जीने की परिस्थितियाँ अत्यन्त कठिन थी, अधिक से अधिक सन्तान उत्पन्न करना एक महत्वपूर्ण काम था और नारी इस काम के लिए सीधे-सीधे जुड़ी थी। लेकिन समय के साथ पुरुषों के प्रबल से प्रबलतर होते चले जाने के कारण स्त्री अपनी स्वतंत्रता खोकर पुरुष की अनुगूँज मात्र बनकर रह गई। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए 19वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन ने महिलाओं को केंद्र में रखकर उनकी स्थिति में सुधार के लिए अथक प्रयास किए।

कीवर्ड - निराला, कथा साहित्य, चेतना

-----X-----

परिचय

मनुष्य सृष्टि का सर्वाधिक चिन्तनशील प्राणी है। चेतना के बिना वह कोई भी काम, चाहे वह सही हो या गलत, पूरा नहीं कर सकता। यही विशेषता मनुष्य में ऐसे काम करती है जिसके कारण वह जीवित प्राणी समझा जाता है। मनुष्य अपनी कोई भी शारीरिक क्रिया तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि उसे यह ज्ञान न हो कि वह उस क्रिया को कर सकेगा। इसके विपरीत चेतना रूप में इच्छा, संवेदना, सचेत क्रिया आदि समस्त पदार्थ पाये जाते हैं। उसी पल की सजात क्रियाओं को 'चेतना' कहकर पुकारा जाता है। 'चेतना' शब्द को विद्वान 'आत्मवाचक' मानकर 'चित्' धातु से कर्ता अर्थ में ल्यप् प्रत्यय से 'चेतना' शब्द की निर्मिति मानते हैं।

इस चेतना के समान्यतः "अण्डस्टैंडिंग, सेंस, इंटेलेजेंस आदि आधुनिक भावबोध करने वाले शब्दों के गृहित अर्थ प्रयोग पाये जाते हैं। विशेष रूप से 'चेतना' शब्द का प्रयोग मानसिक प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है। चेतना की प्रमुख विशेषताएँ हैं - निरन्तर परिवर्तनशीलता अथवा प्रवाह, इस प्रवाह के साथ-साथ विभिन्न अवस्थाओं में एक अविच्छिन्न एकता और साहचर्य। विभिन्न विषयों की

अलग-अलग समय पर चेतना होने पर हम सदा यह भी अनुभव करते हैं कि "मैंने अमुक वस्तु देखी थी।"

विज्ञानवादी और प्रत्ययवादी दार्शनिक चेतना या विज्ञान को शाश्वत और एकमात्र सत्ता मानते हैं। इस अर्थ में 'चेतना' शब्द 'आत्मा' का समानार्थक हो जाता है, परन्तु साहित्य में और दर्शन में भी इस अर्थ में प्रायः 'चैतन्य' शब्द का उपयोग होता है, 'चेतना' शब्द सामान्य मनोवैज्ञानिक अर्थ में ही अधिक आता है। 'चेतना' शब्द बहुत ही व्यापक है। शब्द की व्युत्पत्ति मूल चिट्ठी से प्रत्यय 'ल्युट' और 'टॉप' के साथ ली गई है, जिन्हें 'बोध' या 'चैत्य' के पर्यायवाची के रूप में भी लिया जाता है। इस शब्द का प्रयोग बुद्धि, ज्ञान, मनोवृत्ति, सुधि, स्मृति, चैतन्य, संज्ञा, होश, जीवनी-शक्ति, चेतनता आदि अर्थों में किया जाता है। 'व्यावहारिक पर्यायवाची कोश' में चेतना के चैतन्य, संज्ञा, सुध-बुध, होश-हवास आदि अर्थ दिए हैं। 'हिन्दी शब्द सागर' में चेतना के निम्नलिखित अर्थ दिए हैं -

1. बुद्धि

2. मनोवृत्ति
3. ज्ञानात्मक मनोवृत्ति
4. भृति, सुधि, याद
5. चेतना, चैतन्य तथा संज्ञा व होश।”

चेतना के भेद:

डा॰ लक्ष्मी शुक्ला ने चेतना के पाँच भेद माने हैं:-

1. चेतना ज्ञान
2. चेतना आत्म-चेतना
3. चेतना मनोभाव
4. चेतना कल्पना
5. चेतना इच्छा

चेतना के उपर्युक्त भेदों के अन्तः संबंधित महत्त्व को तथा इनमें है-

संक्षिप्त विश्लेषण के माध्यम से इनके अलग-अलग तथा शामिल चेतना को अधिक आसानी से समझा जा सकता

चेतना का वर्गीकरण:

सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर, व्यक्तिगत स्तर पर, जाति या वंश के स्तर पर, देश-राष्ट्र के स्तर पर, विश्व के समूचे स्तर है सोचने-समझने की शक्ति यदि चेतना है तो सामाजिक चेतना, भौगोलिक चेतना, आध्यात्मिक चेतना, बाल चेतना, खल चेतना, संत चेतना आदि अनेक प्रकार से चेतना को वर्गीकृत किया जा सकता है।

- सामाजिक चेतना:
- राजनीतिक चेतना:
- आर्थिक चेतना
- सांस्कृतिक चेतना

दलितों एवं पीड़ितों के प्रति सहानुभूति एवं संघर्ष चेतना

निराला की कथा में शूद्र और द्विज जातियों की सामाजिक परिस्थितियों पर जगह-जगह टिप्पणियाँ मिलती हैं। निराला

ने ऊंच-नीच का भेद मिटाने के लिए निरंतर संघर्ष किया। निराला ने लिखा है- "वे शूद्र या अछूत इस देश के उच्च वर्ग के लोगों के मन में सदियों से रहे हैं। निराला जी ने कभी भी अपनी जाति श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं किया। उनका झूठा धर्म हमेशा लाठी से खारिज किया गया है। गरीबों की आवाज सुनी। उनके लिए ताकतवर से लड़ना उनके साथ जुड़ना उनके सुख-दुःख में। यही कारण है कि इतनी बड़ी भगत-सभा सवर्णों की संख्या को पछाड़ते हुए इस जुलूस में बहुत आगे दिख रही थी। शिव जी अपने भूतों से ही सुशोभित हैं।

निराला को श्रद्धा से याद करने वालों में निम्न जाति के लोगों की संख्या अधिक थी और उच्च जाति के लोगों की संख्या बहुत कम थी। इससे पता चलता है कि निराला ने कुलीनता और अभिजात वर्ग के खिलाफ संघर्ष में क्या भूमिका निभाई! उन्होंने अपने गांव के चमारों और पासियों को समान दर्जा दिया और लड़ाई लड़ी ब्राह्मणों का अहंकार। उन्होंने यह भी दिखाया है कि गरीबों की जाति के साथ कोई सीधा संबंध नहीं है। 'बिलेसुर' जाति ब्राह्मणों की थी, लेकिन बहुत गरीब थे। उन्होंने बकरियां उठाई और हार नहीं मानी उनकी गरीबी से निराला पीड़ितों के प्रबल समर्थक थे। जब तक देश में ऊंच-नीच का भाव रहेगा, स्त्री-पुरुष का भेद रहेगा और अमीर-गरीब का भेद रहेगा, तब तक भारत को वास्तविक स्वतंत्रता नहीं मिल सकती।

उन्होंने स्वतंत्रता के आलोक में दहाड़ने वाले शेरों की आवश्यकता को दृढ़ता से महसूस किया और लक्ष्य रखा कि महिलाओं की स्वतंत्रता के अधिकार और दलितों की समानता के साथ, हम सिर उठाकर अपने भारतीय चरित्र को दुनिया के सामने स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि निराला हिन्दी साहित्य में एक विद्रोही और क्रांतिकारी लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं। वे ऐसे कवि-लेखक हैं, जिनका जीवन संघर्ष का पर्याय रहा है। उन्होंने अपने संघर्ष के दिनों में कथा साहित्य और साहित्य की रचना की है। उनकी तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन उनके कहानी-साहित्य में मिलता है। यह संभव है कि वे सोचते हों कि अपने समय और समाज के इतिहास के साथ सीधा साक्षात्कार काव्य में नहीं, कल्पना में संभव है। इसलिए उनके उपन्यासों में उनके समाज के नारी जीवन की बहुआयामी वास्तविकता की जटिल समग्रता का चित्रण और विश्लेषण उतना पूर्ण नहीं है जितना कि कविताओं में होता है।

निराला के कथा-साहित्य में नारी की राजनीतिक और आर्थिक चेतना

पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता महिलाओं के प्रति इतनी ऊँची और सहानुभूतिपूर्ण नहीं रही है जितनी दिखावा किया जाता है। आदरणीय नामों की चादर ओढ़ने की बजाय नारी को सम्मान की दृष्टि से देखना आवश्यक है। भारतीय नारी के संघर्ष और प्रगति का इतिहास कई मोड़ों से गुजरा है। सदियों से रूढ़िवादिता, जर्जर परंपराओं और शोषण के चंगुल में जकड़ी महिलाओं ने थोड़ा सा समर्थन मिलने के बाद अपनी स्वतंत्रता और पहचान की रक्षा के लिए एक वास्तविक रास्ता खोजने के लिए निकल पड़े। आज महिलाएं पारंपरिक यातना और नई अवधारणाओं के सांझ में संघर्ष करते हुए अपने नए रूप को गढ़ने की कोशिश कर रही हैं।

शिक्षा, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता ने उन्हें एक नई दिशा दी है। अब उसे अच्छी तरह पता चल गया है कि उसकी इज्जत और भावनाएँ तभी महत्वपूर्ण होंगी जब वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होगी। अर्थ मानव जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मनुष्य अपनी जीविका के अर्थ की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता है। अर्थ के बिना मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो सकतीं। स्त्री के लिए अर्थ और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्त्री प्रारंभ से ही पुरुष पर आश्रित रही है और आर्थिक रूप से आश्रित होने के कारण उसे पुरुष द्वारा प्रताड़ित किया जाता रहा है। अगर कोई महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाए तो उसकी कई परेशानियाँ खत्म हो सकती हैं। एक आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिला ही पुरुष की मानसिकता को बदल सकती है, क्योंकि अर्थ व्यक्ति के स्वभाव को बदल देता है। आज हर छोटे से बड़े काम को करने के लिए पैसों की जरूरत है।

तत्कालीन राजनीति परिस्थितियाँ:

1857 के विद्रोह के बाद, भारत में ब्रिटिश आधिपत्य पूरी तरह से जम गया था। अंग्रेजों के संपर्क में आने से हमारे देश में कई वैज्ञानिक अविष्कार भी हुए जिनमें साहित्य की दृष्टि से प्रेस का आविष्कार सबसे महत्वपूर्ण घटना है। पत्रकारिता की सहायता से देश में साहित्य का तेजी से प्रसार होने लगा। हिन्दी पत्रकारिता का प्रभाव सन् 1826 में हुआ, जबकि 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन पं. कलकत्ता में जुगल किशोर 'शुक्ल'। उसके बाद केवल पत्रों की झड़ी लग गई।

भारत के लोग तब काफी संतुष्ट थे। तभी 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके माध्यम से देश के युवाओं की राष्ट्रीय भावना को एक निश्चित केंद्रीय स्थान

मिला। भारत को अमेरिका, रूस, चीन, जापान, इटली आदि के आंदोलनों से भी परिचित कराया गया, क्योंकि मैकाले की कृपा से देश में अंग्रेजी बहुत फैल गई थी। इन आंदोलनों से देशभक्ति और राष्ट्रीय भावनाओं को बल मिलता रहा और भारतेंदु और उनके अन्य सहयोगी अपनी देशभक्ति से भरे साहित्य की रचना करते रहे। धीरे-धीरे कांग्रेस मजबूत होती गई। तब गांधी जी ने सबसे पहले कांग्रेस महासभा में अफ्रीका के भारतीयों की ओर से एक बयान दिया था। कांग्रेस का कार्यक्रम भी धीरे-धीरे रचनात्मक होने लगा, गांधीजी के प्रभाव से यह न केवल अलंकारिक था बल्कि धीरे-धीरे देश के युवाओं को आकर्षित करने लगा। यहीं पर लॉर्ड कर्जन भारत के गवर्नर-जनरल बने और बंग भंग आंदोलन शुरू हुआ, जिसने राष्ट्रीय भावनाओं को और गति दी। गांधीजी ने चंपारण में नील की खेती करने वालों के पक्ष में सरकार के खिलाफ सत्याग्रह किया।

इस प्रकार निराला का संपूर्ण गद्य साहित्यिक सृजन काल राजनीतिक क्षेत्र में अशांति का काल है। तत्कालीन भारत छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था, राजा बहुत उच्छृंखल हुआ करते थे।" इसलिए निराला के उपन्यासों और कहानियों पर उस समय की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

चित्रित समाज.

समाज के घटकों के संबंध में निराला के अपने स्वतंत्र विचार हैं। ये विचार कल्पना के आधार पर स्थिर नहीं थे, इनके पीछे निराला की सामाजिक चेतना की शक्ति थी। समय का जैसा ज्ञान निराला को था, उसके आधार पर उन्होंने कुछ धारणायें बनायीं। हारा हुआ व्यक्ति विनादे से अपने आपको बचा सकता है।

विनोद या हास्य अहंकार की अधिकता को कम करता है, लेकिन निराला में विनोद से अधिक वीरता थी। बंगाल से अधिक उनके शरीर में बैसवाड़े के किसान का ओज था। अतः अत्याधिक संवेदनशीलता ने उनकी वीरता को अंतर्मुखी कर दिया और फिर जैसे समाज पर पड़ने वाले आघात वे स्वयं अपने ऊपर ही करने लगे। बैसवाड़े की उर्वर भूमि ने हिन्दी साहित्य को अनेक अद्वितीय लेखक दिये हैं। प्रतापनारायण मिश्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, शिवमंगल सिंह सुमन, रामविलास शर्मा और स्वयं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि ने इस भूमि से सरस्वती सरस्वती पुत्रों की समृद्ध परंपरा प्राप्त की है।

उपसंहार

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को आधुनिक साहित्य का एक ऐसा मजबूत स्तंभ माना जाता है, जिन्होंने अपने विपुल साहित्य से आधुनिक हिंदी साहित्य को गौरवशाली और समृद्ध बनाया है। उनका जीवन अपने आप में एक साहित्य है, जिसमें संघर्ष, विरोधाभासों और पीड़ाओं के लंबे और अनियमित मार्मिक चित्रों की श्रंखला सुशोभित है। ऐसी स्थिति देखकर यह भाव उत्पन्न होता है कि निराला का साहित्य पहले चला गया था। 'दो दना' शीर्षक की कहानी 1946 में लिखी गई थी और 1961 में निराला जी की मृत्यु के बाद 'नई कहानियां' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, यह कहानी अधूरी है। इस प्रकार निराला ने कुल 25 कहानियों की रचना की। निराला की कहानियों का विश्लेषण करते हुए नंद किशोर नवल लिखते हैं- "निराला के प्रथम चरण के उपन्यासों में उसी प्रकार कल्पना और यथार्थ के बीच अंतर्विरोध की धारा है, ठीक उसी प्रकार उनकी कहानियों में। उपन्यासों की तुलना में कहानियों में। इसका सबसे अच्छा उदाहरण 'श्यामा' नामक उनकी कहानी है। इसमें पहली बार किसान अपने सभी दमन के साथ प्रकट होता है। निराला मजबूत सामंतवाद विरोधी लोकतांत्रिक चेतना के लेखक थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सरमोनियर विलियम्स, संस्कृत, इंग्लिश डिक्शनरी, पृष्ठ-391
2. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ-386
3. सं. डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल', भाषा-शब्द-कोष, पृष्ठ-589
4. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, पृष्ठ-247
5. डॉ. देवराज पथिक, नयी कविता में राष्ट्रीय-चेतना, पृष्ठ-16
6. महेन्द्र चतुर्वेदी एवं ओमप्रकाश गावा, व्यवहारिक हिन्दी पर्यायवाची कोश, पृष्ठ-69
7. सं० श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, दूसरा खण्ड, पृष्ठ-1028

8. अरविन्द कुमार, कुसुम कुमार, हिन्दी थियारस, समान्तर कोश, पृष्ठ-145
9. आचार्य रामचन्द्र वर्मा, लोकभारती प्रमाणित हिन्दी कोश, पृष्ठ-265
10. सं. रामप्रकाश त्रिपाठी, हिन्दी विश्वकोश, पृष्ठ-282
11. गजानन माधव मुक्ति बोध, कामायनी: एक पुनर्विचार, पृष्ठ-2
12. डा. अवधनारायण त्रिपाठी, नई कविता में वैयक्तिक चेतना, पृष्ठ-17
13. डा. देवराज पथिक, नई कविता में राष्ट्रीय चेतना, पृष्ठ-18
14. डा. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, पृष्ठ-247
15. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, अणिमा, पृष्ठ-6

Corresponding Author

Krishna Kanti Bhagat*

Research Scholar, Kalinga University